रजिस्ट्री सं. डी. (डी.एन.)-72

REGISTERED No. D. (D N.)-72

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 143] नई दिल्ली, रविवार, अगस्त 15, 1982/श्रावण 24, 1904
No. 143] NEW DELHI, SUNDAY, AUGUST 15, 1982/SRAVANA 24, 1904

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

वित्त मंत्रालय
(राजस्व विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 15 अगस्त, 1982

संख्या ए-21021/3/82-प्रशासन 3 (ख).—स्वतन्त्रता दिवस, 1982 के अवसर पर, राष्ट्रपति, केन्द्रीय उत्पादन शुल्क विभाग के निम्नलिखित अधिकारी को, उनके द्वारा अपने जीवन को भी जोखिम में डालकर की गई विशिष्ट रूप से प्रशंसनीय सेवा के लिए प्रशंसा प्रमाण-पत्र प्रदान करते हैं ।

अधिकारी का नाम और पद

श्री गुरुशरण जेठालाल ब्रह्मभट्ट, निरीक्षक (साधारण ग्रेड), सीमा-शुल्क (निवारक), केन्द्रीय उत्पादन-शुल्क समाहर्तालय, अहमदाबाद ।

जिन सेवाओं के लिए प्रमाण-पत्र दिया गया है, उनका विवरण

बलसाड़ में सीमा-शुल्क के वरिष्ठ अधीक्षक को, 8-1-1982 को यह सूचना मिली कि यू एम आर 1021 की पंजीकरण संख्या वाले "चन्द्रसागर" नामक पोत की दो दिन के अन्दर दमन समुद्र तट पर पहुंचने की संभावना है जिसमें अत्यधिक मात्रा में अवैध माल भरा हुआ है । तदनुसार 8-1-1982 को श्री एन. एन. पटेल और श्री जी जे ब्रह्मभट्ट को एक विभागीय नौका देकर गश्त लगाने का प्रबन्ध किया गया । विभागीय नौका द्वारा समुद्र में व्यापक गश्त आरम्भ की गई और कुछ संदिग्ध संकेत सुने गए । 9-1-1982 को रात के लगभग नौ बजे विभागीय नौका पर तैनात अधिकारियों ने कोलकदमन तट पर समुद्र किनारे से लगभग 30 फुट दूर एक पोत देखा जो सन्देहजनक तरीके से चल रहा था और जिस पर मार्ग-निर्देशक रोशनी (नेवीगेशन लाइट) नहीं थी । प्रकाश-पिस्तौल द्वारा तत्काल संकेत दिए गए । सीमा-शुल्क विभाग की नौका को देखते ही उक्त पोत ने, जांच के लिए रुकने की बजाय, समुद्र की ओर घूमकर बच निकलने के लिए अपनी रफ्तार तेज करनी आरम्भ कर दी । विभागीय नौका ने भी, समुद्र की ओर तेजी से भागते संदिग्ध पोत का तेजी से पीछा किया । विभागीय नौका पर तैनात अधिकारियों ने जब यह देखा कि पोत न तो दिए गए संकेतों की ओर कोई ध्यान दे रहा है और न ही वह रुक ही रहा है तो उन्होंने, सर्विस राइफल और रिवाल्वर से गोलियां चलाना आरम्भ कर दिया । सर्विस राइफल और रिवाल्वर से कुल 124 राउंड गोलियां छोड़ी गईं ।

इसके परिणामतः उक्त पोत पर सवार व्यक्ति, पोत के खाव (होल्ड) में कूद पड़े और विभिन्न स्थानों पर छिप गए । इसके कारण उक्त पोत, अनियंत्रित हो गया और उसने अव्यवस्थित रूप से चलना आरम्भ कर दिया क्योंकि इसके स्टियरिंग को नियंत्रित करने वाला कोई नहीं था । विभागीय [redacted] पर सवार अधिकारियों ने देखा कि उक्त पोत ने अचानक बड़

अनियंत्रित और चक्राकार रूप में चलना शुरू कर दिया । इससे विभागीय नौका पर सवार अधिकारियों के समक्ष एक बड़ी समस्या खड़ी हो गई कि पोत के पास कैसे जाया जाए और उस पर चढ़कर उसे नियंत्रित कैसे किया जाए ? तथापि, बड़े साहस का परिचय देते हुए विभागीय नौका को भी तस्करों के पोत के साथ-साथ दौड़ाया गया और श्री जी. जे. ब्रह्मभट्ट ने अत्यधिक जोखिम उठाते हुए और असाधारण साहस तथा कर्त्तव्य-निष्ठा को प्रदर्शित करते हुए, उस अत्यधिक अनियंत्रित पोत में कूदने की कोशिश की । वे अकेले तस्करों के पोत में कूदने में सफल हो गए और वह भी दुश्मन तस्करों के बीच जो हिंसा का रास्ता अपनाकर उन्हें गम्भीर शारीरिक चोट पहुंचा सकते थे ।

इस प्रकार श्री ब्रह्मभट्ट ने बहुत तीव्रगति से तथा अनियंत्रित तरीके से जा रहे ऐसे पोत में जिसमें 11 शत्रु तस्कर थे, छलांग लगाकर अनुकरणीय वीरता तथा कर्त्तव्य-निष्ठा को प्रदर्शित किया । वे अपने हाथ में केवल एक रिवाल्वर लिए अकेले ही पोत तक पहुंचने में सफल हो गए । यह इस अधिकारी के साहसिक कार्य के कारण हुआ जिसने बिना आवश्यक उपकरणों जब्तशुदा अरबी नाव (ढो) के साथ समुद्र में जाने का साहस ही नहीं किया अपितु बहुत बड़ा व्यक्तिगत खतरा मोल लेकर इस चुनौती का सामना इसलिए किया ताकि 82,22,850/- रुपये मूल्य के निषिद्ध माल से लदे हुए 'चन्द्रसागर' नामक पोत को रोका जा सके । इस पोत में 480 अश्व-शक्ति वाला बिल्कुल नया 'मित्सुबिशी' इंजिन लगा हुआ था ।

श्री ब्रह्मभट्ट ने ऐसे मौके पर अपने जीवन को जोखिम में डाला क्योंकि वह समुद्र की क्षुब्ध लहरों में गिर सकते थे या दो पोतों की भिड़न्त में कुचले जा सकते थे अथवा पोत में सवार 11 तस्कर हिंसा पर उतारू होकर उन्हें गम्भीर चोटें पहुंचा सकते थे । परन्तु श्री ब्रह्मभट्ट ने उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता तथा कर्त्तव्य-निष्ठा प्रदर्शित की जो तस्करी विरोधी कार्य में लगे अन्य अधिकारियों के लिए प्रेरणा के स्रोत के रूप में कार्य करेगी ।

रमेश चन्द्र मिश्र, अवर सचिव

Name of the officer and rank :

Shri Gurusharan Jethalal Brahmbhatt, Inspector (Ordinary Grade), Customs (Preventive) Collectorate of Central Excise Ahmedabad.

Statement of services for which the certificate has been awarded :

On 8-1-1982 an information was received by Senior Superintendent of Customs, Bulsar that one vessel by name "Chandrasagar" Registration No. UMR-1021 was likely to reach Daman coast within two days loaded with huge quantity of contraband goods. Accordingly sea patrolling was arranged with Shri N. N. Patel and G. J. Brahmbhatt, Inspectors on board the departmental launch on 8-1-1982. Extension sea patrolling was undertaking by the departmental launch and certain suspicious signals were monitored. On 9-1-1982 at about 21.00 hrs. the officers on board the departmental launch sighted one vessel on Kolak-Daman coast in about five fathoms of water moving in a suspicious manner without navigation lights. Immediate signals were given by the flare pistol. On seeing the customs launch, the said vessel instead of stopping for examination, changed the direction towards the sea and started speeding up in a bid to escape. The departmental launch also started a hot chase and followed the suspect vessel speeding away towards the sea. Seeing that the boat had neither heeded to the signals given nor seemed to be stopping, the officers on board the departmental launch resorted to firing with the service rifle and revolver. In all 124 rounds were fired from service rifle and revolver.

As a result of that, the persons on board the said vessel, jumped into the hold of the vessel and got themselves hidden at different places. Due to this the said vessel was left without any control and started moving in a very erratic manner as there was no one at the wheel to control it. It was seen by the officers on board the departmental launch that the said vessel had suddenly started moving very erratically and in circles. This posed a great problem for the departmental launch to go alongside and to board and control the vessel. However, showing great courage the departmental launch was also made to run along the smugglers boat and Shri G. J. Brahmbhatt taking great risk and displaying extraordinary courage and devotion to duty tried to jump into the said boat which was moving in a very erratic manner. He succeeded in jumping into the smugglers boat alone and that too amongst the hostile smugglers who could have turned violent and caused serious physical injury to him.

Thus Shri Brahmbhatt displayed exemplary bravery and devotion to duty of the highest order by jumping into the smugglers' vessel which was moving with tremendous speed and in an erratic with 11 hostile smugglers on board. He succeeded in reaching the vessel single-handed with only a revolver in his hand. It is owing to the courageous performance of this officer, who not only ventured to go out into the sea with illequipped confiscated arabdhow, but also meeting the challenge at great personal risk, that the vessel 'Chandrasagar' loaded with contraband goods valued at Rs. 82,22,850 could be intercepted. The vessel was fitted with a brand new 'Mitsubishi' engine of 480 H.P.

Shri Brahmbhatt faced great risk to his life at that moment as he could have fallen into the choppy sea or got crushed between the impact of two vessels or the 11 smugglers on Board could have turned violent and caused serious injuries to him. But Shri Brahmbhatt had shown dediction and devotion to duty of the highest order which would act as a source of inspiration to others engaged in anti-smuggling work.

R. C. MISRA, Addl Secy.

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

NOTIFICATION

New Delhi, the 15th August, 1982

No. A-21021/3/82-Ad.IIIB.—The President is pleased, on the occasion of Independence Day, 1982, to award an Appreciation Certificate to the under mentioned officer of the Central Excise Department for exceptionally meritorious service rendered by him when underaking a task even at the risk of his life.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVT. OF INDIA PRESS, RING ROAD, NEW DELHI-110064
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI-110054, 1982